178

आंवला

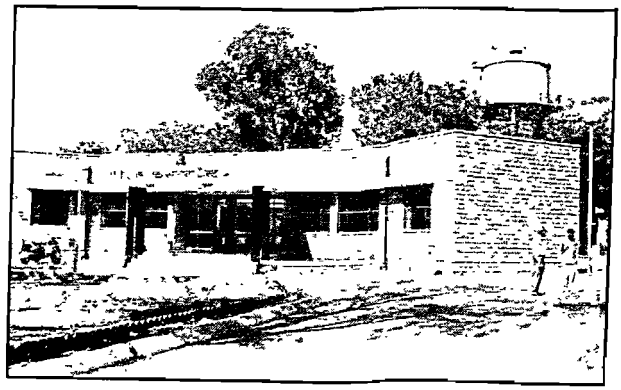

डॉ. पी.आर. मेघवाल

कृषि तकनीक सूचना केन्द्र
केन्द्रीय रूक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
जोधपुर - 342 003

आंवला

आंवला एक महत्वपूर्ण व्यापारिक महत्व का फल वृक्ष है, जिसके फलों में विटामिन सी की मात्रा बरबडोस चैरी के बाद सबसे अधिक पाई जाती हैं। (500-700 मिग्रा. प्रति 100 ग्राम) इसके अलावा आंवला के फलों में कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण व रेशा की भी अधिकता होती है।

आंवला के ग्राफटेड पेड़ मध्यम ऊँचाई वाले (10-15 सेमी.) एवं एक बार लगाने के पश्चात् 40-50 वर्ष की उम्र तक फलते फूलते रहते हैं। आंवला के पेड़ों पर दो प्रकार के प्ररोह या शाखाएं पाई जाती है। सीमित तथा असीमित शाखाओं पर सीमित प्ररोह निकलते हैं, जिनकी आयु लगभग एक वर्ष होती है। सीमित शाखाओं पर ही पुष्पन व फलन होता है तथा प्रतिवर्ष पुराने सीमित प्ररोह मार्च-अप्रेल में गिर जाते हैं व इसके तुरन्त बाद नये सीमित निकलते हैं जिन पर उसी समय फूल लगते हैं।

उन्नत किस्में :-

राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियों एवं जलवायु के अनुरूप चकैया, कृष्णा, कंचन, फ्रांसिस व एन.ए. 7 किस्में उत्तम पाई गई हैं।

पौधे लगाना :-

ऊपर बताई किस्मों में से किन्हीं दो तीन किस्मों को साथ में लगाने से फलन अच्छा होता हैं। बीजू पौधों पर उपर्युक्त किस्मों के आँख (बड) चढ़े हुए पौधे किसी प्रमाणित स्त्रोत अथवा सरकारी पौधशाला या अनुसंधान केन्द्र से प्राप्त करने चाहिए।

पौधे लगाने से पूर्व खेत की अच्छी तरह जुताई करके समतल कर लेना चाहिए तथा सिंचाई की नालियों पर जल निकास की भी उचित व्यवस्था कर लेनी चाहिए। इसके पश्चात् मई-जून के महीने में 8-10 मीटर की दूरी पर एक घन मीटर आकार के गड्ढ़े खोदें, जिस भूमि में 1-3 मीटर गहराई पर कठोर परत हों। 10-15 दिन धूप से उपचारित होने के बाद 30-40 किलो देशी खाद को गड्ढ़े की उपरी मिट्टी में मिलाकर भर देना चाहिए। दीमक की रोकथाम के लिए 100 ग्राम एन्डोसल्फान 4 प्रतिशत चूर्ण प्रति गड्ढ़े के हिसाब से खाद व मिट्टी के मिश्रण में मिला सकते हैं। ऊपर बताई विधि से गड्ढ़ों को भरने के पश्चात् एक अच्छी वर्षा होने दें अथवा सिंचाई कर दें ताकि मिट्टी अच्छी तरह बैठ जाए। पौधे जुलाई-अगस्त अथवा फरवरी-मार्च में लगाये जा सकते हैं। प्रत्यारोपण के बाद पौधों के चारों ओर की मिट्टी को दबाकर सिंचाई करनी चाहिए।

कंटाई-छंटाई :-

आवला के पेड़ों में विशेष कटाई-छटाई की आवश्यकता नहीं होती है। शुरूआती वर्षो में ट्रेनिंग महत्तवपूर्ण है। इसके लिए 70-80 सेमी. की उंचाई पर मुख्य तने को काट कर 4-6 पर्याप्त अन्तर वाली चौड़ी कोणदार शाखाओं का फ्रेमबर्क बनाना चाहिए। इसके आतिरिक्त प्रतिवर्ष फल तोड़ने के पश्चात् कमजोर, क्षतिग्रस्त व रोगग्रस्त शाखाओं को काटते

रहना चाहिए।

जहां तक फलन के लिए कंटाई-छंटाई का प्रश्न है आंवला में कम से कम एक वर्ष पुरानी शाखाओं पर ही पुष्प आते हैं। उसी वर्ष की शाखाओं पर जो फूल आते समय निकलते हैं, उन पर आमतौर पर फूल नहीं लगते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि नई व पुरानी शाखाओं की संख्या पचास-पचास प्रतिशत के अनुपात में बनाई रखी जानी चाहिए।

खाद व उर्वरक :-

एक तरूण वृक्ष (1-4 वर्ष) को 15-20 किग्रा. तथा वयस्क वृक्ष (5 वर्ष या अधिक) की 30-40 किग्रा. गोबर की खाद जुलाई-अगस्त माह में प्रतिवर्ष देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त 30 ग्राम नत्रजन प्रति पेड़ प्रति वर्ष उम्र की दर से 10 वर्ष तक तथा इसके बाद 620-900 ग्राम नत्रजन प्रति पेड़ हर वर्ष देना चाहिए। प्रत्येक वयस्क वृक्ष को 1 किग्रा. सुपर फास्फेट तथा 1-1.5 किग्रा. म्यरेट ऑफ पोटाश भी देना चाहिए। ये सभी उर्वरक वर्ष में दो बार सितम्बर-अक्टूबर व मार्च-अप्रेल में फल बनने के पश्चात् बराबर मात्रा में देना चाहिए। उर्वरकों को वृक्ष के परिसीमा में देकर मिट्टी में अच्छी तरह मिला कर सिंचाई कर देनी चाहिए।

सिंचाई :-

पौधे लगाने के तुरन्त बाद सिंचाई करे तथा बाद में 7-10 दिन के अन्तर पर प्रथम दो वर्ष तक सिंचाई करें। इसके पश्चात् गर्मी में 15-20 दिन व सर्दी में 20-25 दिन छोड़ कर सिंचाई कर सकते हैं। वर्षा ऋतु में आमतौर पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं रहती है लेकिन वर्षा

का अन्तराल एक महीने से ज्यादा रहे तो सिंचाई अवश्य करनी चाहिए।

अन्तर्शस्यः-

चूंकि आंवला के पेड़ काफी दूरी पर लगाये जाते हैं, आरंभिक वर्षो में चना, मटर, मूंग, ग्वार इत्यादि लगाकर अतिरिक्त आमदनी की जा सकती हैं।

रोग व कीट नियंत्रण :-

आंवला रस्टः- यह एक कवक जनित रोग है जिसका प्रकोप होने पर पत्तियों पर लाल रंग के एकल या समूहों में वृत्ताकार या अर्द्धवृत्ताकार (2-5 मिमी. व्यास) धब्बे बन जाते हैं। यह अगस्त से नवम्बर तक जारी रह सकता है रोकथाम के लिए इन्डोफिल, एम 45- 0.2 प्रतिशत दवा का छिड़काव 20-25 दिन के अन्तर पर रोग के लक्षण खत्म होने तक करें।

छाल खाने वाली झिल्लियां :- यह शाखाओं व तने में छेद करके पेड़ को हानि पहुँचाती हैं इसकी रोकथाम के लिए 0.03 प्रतिशत एल्ड्रिन अथवा रूई को मिट्टी के तेल में गीला करके छेद में डाल करके उपर से छिकनी मिट्टी से बन्द कर देना चाहिए।

प्ररोह पिटिक कीट :- इस कीट की नवजात झिल्लियां जुलाई-सितम्बर माह में शाखाओं के सिरों पर छेद कर उनके भीतर बैठती हैं। इससे प्रभावित शाखा का अग्र भाग बाहर की ओर उभर जाता है और एक बढ़ी हुई और संयुक्त गांठ सी लगती हैं। इससे शाखाओं की वृद्धि रूक जाती है। प्रभावित शाखाओं को काट कर जलाकर 2 प्रतिशत

पेराथियान का छिड़काव करना चाहिए।

फलों का विकास तुड़ाई एवं उपज :-

पौधे के उचित रख रखाव की स्थिति में चार पांच साल बाद फल देना शुरू कर देते हैं फल मार्च-अप्रेल में फूल आने के साथ ही लग जाते हैं लेकिन जून माह तक सुषुप्तावस्था में रहते हैं तथा दिखाई नहीं देते हैं। जुलाई-अगस्त में फल बढ़ना शुरू करते हैं तथा अचानक दिखाई पड़ते हैं। आरम्भ में फल हरे रंग के होते हैं जो कि परिपक्वता पर हल्के पीले रंग में बदल जाते हैं और कुछ किस्मों में ईंट के रंग के हो जाते हैं। फल किस्म के अनुसार नवम्बर से फरवरी तक पकते हैं। कृष्णा व एन.ए. 8 किस्में नवम्बर-दिसम्बर में ही पक कर तैयार हो जाती हैं। जब कि चकैया, एन.ए. 7 व कंचन किस्मों के फल जनवरी माह तक तैयार हो जाते हैं।

फलों की उपज आंवला की किस्म पर काफी निर्भर करती हैं, चकैया, कंचन व एन.ए. 7 में आमतौर पर 8-10 वर्ष पुराने पेड़ में 80-100 किग्रा. प्रति पेड़ उपज ली जा सकती है। पेड़ों की उम्र के साथ-साथ उपज भी बढ़ती जाती है इसलिए 15-30 वर्ष की उम्र में 2-3 क्विंटल फल प्रति पेड़ हो सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र **परियोजना प्रबन्धक**
कृषि तकनीक सूचना केन्द्र
केन्द्रीय रूक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
जोधपुर - 342 003
दूरभाष कार्यालय - 0291-740765

6 Printed at ITP Graphic, Ju Ph. 641778